بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **26.08.16** बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला दुनया के विभिन्न देशों में रहने वालों के दिलों में अहमदिय्यत के लिए प्रेरणा पैदा करता है कुछ लोगों को सपनों के द्वारा अहमदिय्यत का यथार्थ बता रहा होता है, कहीं कोई किताब या लिट्रेचर तबलीग़ का कारण बन जाता है, कहीं अहमदियत का विरोध इसको फैलाने में खाद का काम देता है, कहीं अहमदियों के आचरण दूसरों को अहमदिय्यत की ओर आकर्षित करते हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

बर्तानियः के जलसे के दूसरे दिन अल्लाह तआला की कृपाओं की वर्षा का वर्णन होता है जहाँ विभिन्न विभागों के आंकड़े प्रस्तुत होते हैं, जमाअत की प्रगति पर चर्चा होती है। इन आंकड़ों के साथ मैं उनसे सम्बंधित घटनाएँ भी बयान करता हूँ परन्तु डेढ़ दो घन्टे में आंकड़ों का विस्तार पूर्वक वर्णन नहीं हो सकता तथा न ही घटनाएँ बयान की जा सकती हैं और जो नोट्स पढ़ने के लिए मैं लाता हूँ वे लगभग उसी प्रकार वापस चले जाते हैं। ये आंकड़े तो तहरीक-ए-जदीद ने प्रकाशित करना आरम्भ किए हैं, पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। जहाँ तक घटनाओं का सम्बंध है, उनको मैं विभिन्न अवसरों पर बयान करता रहता हूँ। आज भी मैं इनमें से कुछ घटनाएँ बयान करुंगा जिनसे पता चलता है कि किस प्रकार अल्लाह तआला दुनया के विभिन्न देशों में रहने वालों के दिलों में अहमदिय्यत के लिए प्रेरणा उत्पन्न करता है। कुछ लोगों को सपनों के द्वारा अहमदिय्यत का यथार्थ बता रहा होता है, कहीं कोई किताब या लिट्रेचर तबलीग़ का कारण बन जाता है, कहीं अहमदियत का विरोध इसको फैलाने में खाद का काम देता है, कहीं अहमदियों के आचरण दूसरों को अहमदिय्यत की ओर आकर्षित करते हैं। फिर ऐसी घटनाएँ भी हैं जो दूर देश के रहने वालों के लिए अहमदियत पर ईमान एंव विश्वास के अद्भुत दृश्य हमें दिखाती हैं। बच्चों की तर्बियत को देखें तो अहमदय्यित क़बूल करने अथवा अहमदियों के सम्पर्क में रहने से बच्चों में भी आश्चर्य जनक बदलाव पैदा होता है जिसको दूसरे भी अनुभव किए बिना नहीं रह सकते। सारांश यह कि यदि न्याय की दृष्टि से देखें तो हम कह सकते हैं कि निःसन्देह हम एक व्यवस्था के अंतर्गत इस्लाम का वास्तविक सन्देश पहुंचाने का प्रयास करते हैं परन्तु जो फल अल्लाह तआला लगाता है वे इससे बहुत अधिक हैं जो हमारे प्रयत्न होते हैं। अहमदियत की प्रगति हमारे प्रयासों तथा माध्यमों के द्वारा नहीं अपितु अल्लाह तआला के फ़ज़्लों से हो रही है। अब मैं कुछ घटनाएँ पेश करता हूँ-

गिनी कनाकरी के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि जमाअत के परिचय पर आधारित दो पृष्टों का लीफ़ लैट ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से देश के चारों छोरों तक फैल चुका है तथा हमें देश के दूर सुदूर स्थानों से फ़ोन आ रहे हैं कि हम अपने बुज़ुर्गों से इमाम मेहदी और मसीह के विषय में सुना करते थे, अब आपका यह लीफ़ लैट देखकर हममें उत्सुकता है कि हम आपसे मिलें क्यूँकि हमें लगता है कि अब समय आ गया है जब उम्मत-ए-मुस्लिमः को एक सुधारक की आवश्यकता है। अल्लाह तआला की कृपा से बहुत से लोगों से हमारे सम्पर्क हुए और वे लोग बैअत करके जमाअत में शामिल हुए। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- लीफ़ लैट तो केवल पता बतलाने का एक माध्यम बना है परन्तु

अल्लाह तआला ने दिलों को पहले ही तय्यार किया हुआ था और जो बुद्धिमान हैं वे अनुभव करते हैं कि यह वही ज़माना है जिसमें सुधारक की आवश्यकता है, मसीह व मेहदी की आवश्यकता है। कौन कह सकता है इस दूस सूदूर क्षेत्र में किसी के प्रभाव के कारण अहमदियत क़बूल की गई अथवा अहमदियत के समाचार पहुंचे। अतः यह अल्लाह तआला का ही काम है किसी मानव प्रयास का इसमें कोई अंश नहीं।

तंज़ानियः के टोडोमा नगर के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम की एक प्रदर्शनी के अवसर पर एक महिला हमारे स्टाल पर आई तथा बड़े आश्चर्य से पूछने लगी कि क्या यह मुसलमानों का स्टाल है? फिर धीरे धीरे किताबों का परिचय प्राप्त करती रहीं अन्त में एक किताब ख़रीदी जिसमें ईसाइयों के विषय में सामग्री थी। एक दिन पश्चात वही महिला अपने पति के साथ पुनः स्टाल पर आई और उस दिन वे दोनों सेना की वर्दी में थे, दोनों फ़ौजी थे। वह महिला कहने लगी कि यह मेरा पति है और हमारी शादी को लम्बा समय हो चुका है, मैं मुसलमान हूँ और ये ईसाई हैं। वह महिला कहने लगी कि मेरा काफ़ी समय से प्रयास था कि मैं अपने पति को इस्लाम की शिक्षा से अवगत कराऊँ तथा इन्हें मुसलमान करूँ परन्तु कहीं से इस्लमा की शिक्षा के विषय में मुझे कोई अच्छी सामग्री नहीं मिल रही थी। कल जब मैं आपके स्टाल पर आई तो मुझे लगा कि आज मैं उचित स्थान पर आई हूँ। इस प्रकार मैंने आपसे कल एक किताब ख़रीदी और इनको दे दी जिसके द्वारा इनके काफ़ी सवाल हल हो गए और शेष मुझे आशा है आपसे बात चीत करके हल हो जाएँगे। इस प्रकार काफ़ी देर तक मुबल्लिग़ के साथ इन दोनों की बात चीत होती रही और वे दोनों बैअत करके अहमदिय्यत अर्थात वास्तविक इस्लाम में दाख़िल हो गए। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- पति को इस्लाम क़बूल कराने की सच्ची तड़प ने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल को इस प्रकार खींचा कि संयोग वश वह वहाँ आ भी गई और फिर दोनों को अल्लाह तआला ने वास्तविक इस्लाम की गोद में आने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

हरस फ़ील्ड के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि यहाँ बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस्लाम के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। कहते हैं कि वांज़ले नगर में तबलीग़ी लीफ़ लैट बांटे गए जिसके कारण वहाँ सम्पर्क स्थापित हुआ। कुछ समय पश्चात वहाँ से पचास से अधिक पुरुष और महिलाएँ चलकर हरस फ़ील्ड में हमारी मस्जिद में आए। उनका उद्देश्य इस्लाम के विषय में जानकारी प्राप्त करना था। प्रतिनिधि मंडल के साथ मस्जिद में ढाई घन्टे का प्रोग्राम हुआ तथा इस्लाम और अहमदियत के बारे में उनके सम्मुख सामग्री पेश की गई जिसके पश्चात प्रश्नोत्तर भी हुए। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- लोगों का स्वयं आना तथा स्वयं आकर्षित होना, यह भी एक कड़ी है कि अल्लाह तआला अब प्रत्येक स्थान पर लोगों के दिलों की तारें हिला रहा है।

फिर हम देखते हैं कि दूर सुदूर के रहने वालों के दिलों को ईमान के बारे में किस प्रकार अल्लाह तआला ने सुदृढ़ किया तथा उनमें बलिदान की भावना भी उत्पन्न की। बैनिन के अमीर साहब लिखते हैं कि अलाडा रीजन की एक जमाअत सोको में इस वर्ष फ़रवरी में एक नई मस्जिद निर्मित हुई। मस्जिद के निर्माण में जमाअत के दोस्तों ने बड़ी श्रद्धा एंव प्रेम से भाग लिया तथा अनेक समय पर बड़ी मात्रा में समय और माल की क़ुर्बानी करते हुए मज़दूरों की सहायता भी करते रहे। महिलाएँ भी दूर दूर से पानी लेकर आती रहीं और इस प्रकार मस्जिद के निर्माण में भाग लेती रहीं। गाँव के स्थानीय सदर ने कहा कि यह मस्जिद क्षेत्र वासियों के लिए शांति पूर्ण इस्लाम का आश्रम है। वहाँ के चीफ़ ने कहा कि मस्जिद अलाडा रीजन की इस कौन्सल के लिए निःसन्देह रौशनी का मीनार है। इस क्षेत्र के निवासी अधिकतर बुत परस्ती के धर्म (शिर्क) से सम्बंध रखने वाले हैं। चीफ़ ने कहा- मैं भी एक समय तक बुत परस्त होता था परन्तु आज अहमदिय्यत के कारण एकेश्वर वादी हो गया हूँ और मैं आप सबको विश्वास दिलाता हूँ कि यह जमाअत सत्य एंव प्रेम का साक्षात नमूना है तथा अहमदिय्यः जमाअत के कारण ही मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि यद्यपि मैं एक बादशाह हूँ परन्तु मेरे ऊपर एक महान बादशाह है जिसकी उपासना हम सब के लिए अनिवार्य है। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ही है जो यह सोच दिलों में पैदा करता है कि अहमदियः जमाअत का पैग़ाम भी सच्चा है तथा इस्लाम की शिक्षा भी सत्य है और यही वास्तविक शिक्षा और पैग़ाम है जो अहमदिय्यः जमाअत दुनया में फैला रही है और यही वह शिक्षा है

जिससे मुशरिक लोग जो हैं वे एकेश्वर वादी बन रहे हैं।

फिर बैनिन के एक मुअल्लिम साहब लिखते हैं कि रेडियो पर तबलीग़ी प्रोग्राम के बीच एक दिन एक दोस्त ग़ान ओविन्टो एरक साहब की फ़ोन काल आई। जनाब ने हमें अपने गाँव में तबलीग़ के लिए आने का निमन्त्रण दिया। कहते हैं- वे अभी अपना पता बता रहे थे कि फ़ोन काल कट गई तथा बात पूरी नहीं हो सकी। मुबल्लिग़ साहब लिखते हैं कि एक दिन हम तबलीग़ के लिए एक गाँव सनर पोता पहुंचे तो एक व्यक्ति हमें देखकर खड़ा हुआ और सब लोगों से कहा कि जल्दी इधर आओ, जिनको हम रेडियो पर सुनते थे वे आज स्वयं हमारे गाँव में आ गए हैं। इस प्रकार वहाँ तबलीग़ के परिणाम स्वरूप 200 से अधिक लोगों ने बैअत की तथा एक नई जमाअत की स्थापना हुई। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- उनकी ईमान की दृढ़ता का हाल भी सुन लें। कहते हैं कि बैअत करने के दो दिन बाद तेज़ वर्षा और आँधी के कारण एरक साहब के घर पर दीवार गिर गई जिसके नीचे आकर उनका आठ महीने का बच्चा चल बसा। यह सब मुशरिकों का गाँव था। गाँव के मुशरिकों ने कहा कि देखो तुम इस जमाअत पर ईमान लाए और अभी से कठिनाईयाँ आनी शुरु हो गईं हैं। इस पर एरक साहब ने कहा कि मैंने जो सच्चाई देखी उस पर ईमान ले आया, बाक़ी संतान और धन दौलत, ख़ुदा ही देता है और वही वापस भी ले लेता है। मैं इस जमाअत से पीछे नहीं हटूंगा, चाहे कुछ भी हो। मैंने अहमदियत क़बूल की है, मैं अहमदी हूँ और इन्शाअल्लाह मरते दम तक अहमदी ही रहूँगा। तो यह है ईमान की मज़बूती और तौहीद पर क़ायम होना जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा अल्लाह तआला लोगों के दिलों में पैदा फ़रमा रहा है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत ज़मीन का एक भाग नमाज़ सैन्टर के लिए भी दिया बल्कि इसमें स्वयं ही एक हल्के से छप्पर इत्यादि का प्रबन्ध तुरन्त कर दिया ताकि क़ुरआन-ए-करीम की क्लासें आरम्भ की जा सकें। अल्लाह तआला इस प्रकार अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने के रास्ते खोलता है।

तन्ज़ानियः के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि शियांगार रीजन के एक गाँव में इस साल एक नई जमाअत का क़्याम हुआ। इसी रीजन के एक गाँव में तबलीग़ के प्रोग्राम का आयोजन हो रहा था। संयोगवश एक महिला वहाँ पहुंची और उसने जब अहमदिया जमाअत का पैग़ाम सुना तो कहने लगी आप लोग हमारे गाँव में भी इस्लाम का पैग़ाम लेकर आँए क्यूँकि वहाँ कुछ मुसलमान हैं और उनकी एक मस्जिद भी है परन्तु जो इस्लाम आप पेश कर रहे हैं वह उनके इस्लाम से पूर्णतः भिन्न है। अतः जब हमारे मुअल्लिम साहिबान ने वहाँ जाकर इस्लाम अहमदियत की तबलीग़ की तो पहले ही दिन मस्जिद के इमाम सहित 93 लोगों ने जमाअत ने प्रवेश प्राप्त किया। जब इस क्षेत्र के सुन्नी मौलवी को पता चला कि ये लोग अहमदी हो गए हैं तो उस गाँव में पहुंचा और कहने लगा तुम लोग पथभ्रष्ट हो गए हो और भटक गए हो, ये लोग मुसलमान नहीं हैं। इस पर नौमुबाओन ने उत्तर दिया कि हमने सोच समझ कर अहमदियत क़बूल की है और यही वास्तविक इस्लाम है इस लिए हम तुम्हारी कोई बात नहीं सुनेंगे।

बैनिन के अमीर साहब लिखते हैं कि बोहीकूँ रीजन की एक जमाअत में हमारी मस्जिद का निर्माण हुआ। उस गाँव में मार्च 2015 में अहमदियत का पौधा लगा था और 245 लोग अहमदियत की गोद में आए थे। जब से इस जमाअत ने अहमदियत क़बूल की है उनको निरन्तर विरोध का सामना है। रिश्तेदारों की ओर से भी विरोध हुआ, गाँव के इमाम की ओर से भी कड़ा विरोध हुआ। गाँव के इमाम ने अन्य इमामों को गाँव में बुलाकर जमाअत के विरुद्ध एक जमावड़ा खड़ा कर दिया परन्तु ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के लोग अपनी बैअत की प्रतिज्ञा पर दृढ़ता पूर्वक स्थापित हैं। गतवर्ष जब यहाँ मस्जिद का निर्माण आरम्भ हुआ तो जमाअत से बाहर के मौलवी खुलकर विरोध करने लगे। लोगों को कहने लगे कि अहमदियों की मस्जिद से अच्छा है कि तुम लोग किसी चर्च में जाकर नमाज़ पढ़ लो। जो मिस्त्री मस्जिद का निर्माण कर रहा था उसके घर जाकर उसको भी धमकियाँ दीं कि वह मस्जिद का निर्माण न करे परन्तु इन समस्त धमकियों एंव विरोध के बावजूद अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत को यहाँ मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली और उसके दो मिनार भी हैं जो तेरह मीटर ऊँचे हैं। बड़ी सुन्दर मस्जिद है। 375 लोग इसमें नमाज़ अदा कर सकते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- अल्लाह तआला सपनों के माध्यम से भी मार्ग दर्शन करता है। आयवरी कोस्ट के सान पैदरो रीजन के एक दोस्त ज़ोनाम अहमद ने बैअत की। जनाब का सम्बंध ईसाई धर्म से था परन्तु बाद में इस्लाम क़बूल करके वहाबी सम्प्रदाय में शामिल हो गए। वे बताते हैं कि इस्लमा क़बूल करने के बाद मैंने नमाज़ सीखी और यथावत् मस्जिद में जाकर नमाज़ों की अदायगी शुरु कर दी। इसी बीच मैंने सपने में एक बुज़ुर्ग को देखा। सपने में ही मुझे पता चला कि यह व्यक्ति ख़ुदा का नबी है। मैं समझा कि सम्भवतः ये हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्शन हुए हैं। कुछ समय पश्चात एक बार फिर मैंने सपने में देखा कि उन्हीं बुज़ुर्ग का चित्र टी वी पर आ रहा है और कोई साथ साथ क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत भी कर रहा है और टी वी के नीचे पट्टी पर फ्रैंच में लिखा हुआ है ''मिशन इस्लामिक अहमदिय्यः'' इस सपने के बाद मैंने मस्जिद के इमाम साहब से अहमदिय्यः जमाअत के विषय में पूछा। पहले तो इमाम साहब ने टाल मटोल से काम लिया परन्तु मेरे आग्रह पर कहने लगे कि ये लोग अहमदी हैं, ये मुसलमान नहीं हैं। तुम्हें क्या हो गया है, किस ने तुमको भटकाया है, क्यूँ तुम अपना इस्लाम नष्ट करने पर तुले हुए हो? उन्होंने मौलवी साहब को उत्तर दिया कि मुझे किसी ने नहीं बहकाया क्यूँकि मैं तो अभी तक किसी अहमदी से मिला ही नहीं। मुझे तो ख़ुदा तआला ने अहमदियत का रास्ता दिखलाया है। घर आकर मुझे और अधिक चिंता होनी शुरु हो गई। कहते हैं कि आख़िर ये अहमदी कौन लोग हैं और इमाम साहब इनको काफ़िर क्यूँ कहते हैं। इस पर मैंने ख़ुदा से दुआ की, कि ऐ ख़ुदा! तू ही मुझे सीधा रास्ता दिखा। मैं अपने मित्रों से जमाअत के विषय में पूछता रहा परन्तु कोई भी सम्पर्क का मार्ग नहीं मिल रहा था। अन्ततः एक दिन एक दोस्त ने बताया कि एक अन्य नगर दलवा में अहमदिय्यत मौजूद है। इस प्रकार मैं लोगों से पूछते पुछाते मिशन हाउस तक पहुंच गया जहाँ मिशनरी साहब ने जमाअत का परिचय कराया। वहाँ मिशन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र देखकर मैं चकित रह गया, पूछने पर मिशनरी साहब ने बताया कि यही इमाम मेहदी और ज़माने के मसीह हैं अतः मैंने उसी समय अहमदिय्यत क़बूल कर ली और मिशनरी साहब को बताया कि यही बुज़ुर्ग मुझे दो बार सपने में दिखाई दिए थे। यह जनाब हमारे मुबल्लिग़ को कहने लगे कि बैअत फ़ॉर्म तो मैंने अब भरा है परन्तु अहमदी मैं उस दिन से हूँ जब ख़ुदा तआला ने सपने में मेरा मार्ग दर्शन कर दिया था।

फिर बैल्जियम से मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहब लिखते हैं कि बैल्जियम जमाअत में नौ-मुबाय इदरीस साहब ने सपने में एक बुज़ुर्ग को देखा फिर दो वर्ष पहले एक दिन टी वी पर विभिन्न चैनल्ज़ बदल रहे थे कि सहसा एम टी ए अल-अर्बिय्यः पर दृष्टि पड़ी। जनाब ने एम टी ए पर जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र देखा तो उन्हें तुरन्त अपना सपना याद आ गया। उन्होंने सपने में उसी बुज़ुर्ग को देखा था। अतः उन्होंने विधिवत् एम टी ए देखना शुरु कर दिया। इस प्रकार उनका दिल अहमदियत की ओर झुकना शुरु हो गया। इसके बाद श्रीमान ने स्वयं प्रयास करके बैल्जियम जमाअत का पता लगाया और मिशन हाउस पहुंचे और कहने लगे कि मैं बैअत करने के लिए आया हूँ। मुरब्बी साहब ने उन्हें कहा कि पहले जमाअत के विषय में कुछ पढ़ तो लें, अधिक जानकारी प्राप्त कर लें, फिर निर्णय लें। उन्होंने कहा कि मुझे मेरे समस्त प्रश्नों के उत्तर मिल चुके हैं। कहने लगे कि मेरा दिल पहले ही सन्तुष्ट था, अतः उन्होंने बैअत कर ली। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- अब देखें, जैसा कि मैंने कहा, कि यदि अफ्रीक़ा के दूर देशों में अल्लाह तआला दिल खोल रहा है तो योरुप में भी खोल रहा है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जिस प्रकार विरोधी हमारे रास्तों में रोकें डालने के प्रयास करते हैं, विरोध में बढ़े चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला उसी प्रकार उनके मुंह बन्द करने के भी सामान कर रहा है और जो नए अहमदी शामिल होते हैं उनके ईमान में दृढ़ता के भी सामान कर रहा है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के ये कुछ वृत्तांत जो मैंने पेश किए हैं, ऐसे वृत्तांत असंख्य हैं। अल्लाह तआला करे कि हम उसके फ़ज़्लों को सदैव ग्रहण करने वाले बनते चले जाएँ और अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले भी हों। हम पर अल्लाह तआला ने जो यह उपकार किया है कि हमें अहमदियत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, इसमें अल्लाह तआला हमें दृढ़ता प्रदान करे तथा ईमान और विवेक में भी बढ़ाता चला जाए।